# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• नवम्बर २०१५ • वर्ष ६६ • अंक ११

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००


# हरियाणा दिवस परिशिष्टांक

## इस अंक में :


सम्पादकीय : विश्वम्भर दयाल सुरेका – विनम्रता, उदारता एवं आत्मीयता की प्रतिमूर्ति

अध्यक्षीय : कुरीतियों के अंधकार से निकलें!

हरियाणा दिवस (१ नवम्बर) पर विशेष परिशिष्ट

अध्यात्म से प्रेरित कार्य प्रगति और आनन्द देते हैं

जयन्ती पर विशेष - जमनालाल जैसा पुत्र कहाँ मिलेगा


## विश्वम्भर दयाल सुरेका नहीं रहे

(१८ नवम्बर १९२९ - १८ अक्तूबर २०१५)

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, शिक्षाविद, उद्योगपति एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मार्गदर्शक, विशिष्ट संरक्षक तथा मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के ट्रस्टी श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका का गोलोकवास १८ अक्तूबर २०१५ को हो गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की हार्दिक श्रद्धांजलि!

[सम्पादकीय श्रद्धांजलि पृष्ठ ५ एवं शोकसभा पृष्ठ ९-१० पर]

## दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

RUPA

# THERMOCOT

## IT'S VERY VERY HOT

India's Most Popular Thermal Wear
For Men, Women & Kids

www.rupa.co.in | Follow 'rupaknitwear' at YouTube | Toll Free No.: 1800 1235 001

For more information, SMS 'RUPA' to 53456 | Shop online 24x7 at www.rupaonlinestore.com

# समाज विकास

◆ नवम्बर २०१५ ◆ वर्ष ६६ ◆ अंक ११ ◆ एक प्रति - ₹ १० ◆ वार्षिक - ₹ १००

## अनुक्रमणिका


| शीर्षक | | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| चिट्ठी आई है | | | ४ |
| **सम्पादकीय** : विश्वम्भर दयाल सुरेका : विनम्रता... | – | *सीताराम शर्मा* | ५ |
| **अध्यक्षीय** : कुरीतियों के अंधकार से निकलें! | – | *रामअवतार पोद्दार* | ७ |
| केन्द्रीय / प्रान्तीय समाचार | | | ८-१५ |
| हरियाणा दिवस परिशिष्ट | | | १७-२० |
| **लेख** : अध्यात्म से प्रेरित कार्य... | – | *डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया* | २१ |
| **लेख** : जमनालाल बजाज... | – | *शिव कुमार लोहिया* | २३ |
| सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत | | | २५ |
| **लेख** : भूखा पेट और भौंडा प्रदर्शन | – | *संजय कुमार हरलालका* | २६ |


**स्वत्वाधिकारी**

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
**प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा**
**सह-संपादक : शिव कुमार लोहिया**
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।


## HIGHER EDUCATION SCHOLARSHIP

### MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

Invites application from the meritorious and needy students of the society for scholarships to pursue Post Graduate Higher Education in the fields of Engineering. Technical, Civil Services, Medicine, Management etc.

**Eligibility** : (A) Meritorius student with excellent academic record between the age of 17-25 years and having secured admission in a recognized educational institution purely on the basis of merit. (B) Annual income of the perents of the candidate should preferably be less than Rs. Three Lakh.

**Procedure**: (A) Application with details of past academic records, proof of admission, parent's income/ along with passport size photograph may be submitted duly recommended by any branch of Marwari Sammelan/Associated Organisations. (B) The Scholarship payable per student per year will be a maximum of Rs. Two Lakh only. (C) One or two scholarships per academic year is reserved for girl students.

**Please apply to** : Chairman, Higher Education Committee, All India Marwari Sammelan,
152B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Phone & Fax : (033) 22680319, e-mail: aimf1935@gmail.com

चिट्ठी आई है

## महाराज अग्रसेन

प्रतिवर्ष महाराज अग्रसेन जयन्ती मनाई जाती है। महाराज अग्रसेन के साम्राज्य में स्वावलंबन एवं समाज विकास का स्वतः स्फूर्त अद्‌भुत प्रकल्प था। अग्रोहा में जब भी कोई नया गृहस्थ बसने आता था, सौहार्द भाव से प्रत्येक परिवार उसे एक मुद्रा (रुपया) एवं एक ईंट भेंट करता था। इस प्रक्रिया से पहले से बसे हुए परिवारों पर किसी प्रकार का अनावश्यक बोझ नहीं पड़ता था एवं नवगृहस्थ को रहने के लिए घर एवं जीविकोपार्जन के साधन जुटाने के लिए आवश्यक पूँजी प्राप्त हो जाती थी। इस प्रकल्प से उनके साम्राज्य में उत्तरोत्तर संख्यावृद्धि हुई एवं सभी नागरिक चैन से रहे। निम्नलिखित पंक्तियों में मेरे कवि हृदय की अभिव्यक्ति है:

हृदयों में था प्यार और दुलराव नैन का
खुशियों का संसार और परिवार चैन का।
दुंदुभि उनके यश की बज रही आज तक है
ऐसा था साम्राज्य महाराज अग्रसेन का।।

अग्रोहा में जब भी कोई नई नवेली आती थी,
हर घर और हर दरवाजे पर शहनाई बज जाती थी।
एक ईंट और एक रुपया हर घर वाला देता था।
नई गृहस्थी बिना कष्ट अग्रोहा में बस जाती थी।।

– **जगदीश प्रसाद पाटोदिया 'चाँद'**, हवड़ा (प. बंग)

## दीपावली संदेश

अनन्त गगन के ये तारे, बन दीप सजे हैं धरती पर।
दीपों से सजी इस धरती को निरख रहा नीला अम्बर।।
जगमग दीपों की माला, ये जगमग-जगमग दीवाली।
मानों मणि हों चमक रहे, शाखा-शाखा, डाली-डाली।।

गणपति जी अब कृपा करें, बुद्धि, विवेक देकर।
विद्या दें माँ शारदे, कर में वीणा लेकर।।
श्रीवृद्धि हो, समृद्धि हो, माँ महालक्ष्मी की दया हो।
नव-वर्ष में उत्कर्ष हो, सब कुछ नया-नया हो।।

शान्ति-सुधा बरसे, हो भग्वत्-प्रेमियों के रेले।
युद्ध और बिषमता के मिट जायें ये झमेले।।
हो सब में भ्रातृ-भाव पैदा, मिटें भेद-भाव सारे।
हो सत्य में मंजे सब, सब सत्य को संवारें।।

जीवन-पथ निष्कंटक हो, बाधा रहित विकास हो।
सबके घर छाये खुशियां, सबके मन में उल्लास हो।।
हर घर स्वर्ग बन जाये, घर-घर में जगमग दीप-प्रकाश हो।
बना रहे भाईचारा, सबका यही प्रयास हो।।

– **जय प्रकाश अग्रवाल**
डेली मार्केट, बलांगीर (ओडिशा)

# गीत

चलो चलें एक दीप जलाएं
अंधकार को दूर भगाएं।

तम की कालिख खुशियों पर
भारी पड़ जाती है।
जाएं किधर समझ न आए
धी चकराती है।
अंतस में जो जमी कालिमा
ज्ञानदीप से दूर भगाएं,
चलो चलें एक दीप जलाएं।

हम क्यों उनकी बात करें
जो केवल खुद की खातिर जीते।
क्यों उनकी तारीफ करें,
जो कंबल ओढ़े घी को पीते।

सच को सच कहने का साहस
जैसे हो सकता कर पाएं
चलो चलें एक दीप जलाएं।

इस दुनियां का खेल तमाशा
पल-पल आशा और निराशा।
किससे कब क्या कहने जाएं
मन की एक न कहने पाएं।
आओ उलझन को सुलझाएं
चलो चलें एक दीप जलाएं।
अंधकार को दूर भगाएं।

– **डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद'**

समाचार सार

## ७८ वर्ष के हुए जुगलकिशोर जैथलिया

***वरिष्ठ चिन्तक, सुप्रसिद्ध समाजसेवी, पश्चिम बंगाल भाजपा के उपाध्यक्ष तथा कुमारसभा पुस्तकालय के मार्गदर्शक श्री जुगलकिशोर जैथलिया जी को उनके ७९वें जन्मदिन पर पुष्पगुच्छ प्रदान कर शुभकामनाएँ देते कुमारसभा के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सर्वश्री सज्जन तुलस्यान, प्रेमशंकर त्रिपाठी, योगेशराज उपाध्याय, महावीर बजाज, अरुण प्रकाश मल्लावत, गिरिधर राय, गोविन्द जैथलिया एवं अन्य।***

सम्पादकीय

# विश्वम्भर दयाल सुरेका : विनम्रता, उदारता एवं आत्मीयता की प्रतिमूर्ति

– सीताराम शर्मा

यह विश्वम्भर जी की आत्मीयता का गुण था कि एक तरफ चाहे कोई व्यक्ति बहुत बड़ा हो या साधारण, उनके व्यवहार में कोई फर्क नहीं पड़ता था और अनजान व्यक्ति को भी अपनी मृदु भाषा, सरलता एवं आत्मीयता से नजदीकी बना लेते थे। सम्भवतः यही वजह थी कि हालाँकि मेरा उनसे परिचय केवल १५ वर्षों का था, लेकिन उनके अपनेपन और स्नेह से वर्षों की नजदीकी बन गयी थी।

*३१ अक्तूबर २०१५ को विवेकानंद हॉल, बालीगंज, कोलकाता में सम्मेलन द्वारा आयोजित शोक सभा में (बायें से) डॉ. जुगल किशोर सराफ, श्री सीताराम शर्मा, श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री रामअवतार पोद्दार, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया एवं श्री शिव कुमार लोहिया।*

विश्वम्भर दयाल जी बराबर जमीन से जुड़े रहे। उधार पर लिये १५० रूपयों से अपना व्यावसाय आरम्भ करनेवाले विश्वम्भर जी का आज करोड़ों का सुरेका ग्रुप है। यह उनके कठोर परिश्रम, अनुशासन एवं विलक्षण बुद्धि का फल है।

एक तरफ जहाँ उन्होंने व्यावसाय में आशातीत सफलता प्राप्त की, वहीं समाज को उनका अनुदान उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय रहा। चाहे वह अभिनव भारती रहा हो या ज्ञान मंच, श्री शिक्षायन हो या मनोविकास केन्द्र, या उद्यान। वे कितने ट्रस्टों और संस्थाओ से जुड़े थे। **जो भी उनके पास सहायता के लिये आये, उनकी चुपचाप मदद करते थे, न कोई पद की चाह, न कोई दखलन्दाजी। हकीकत में वे पद-प्रचार से दूर रहते थे।** उनका प्रभाव उनकी मीठी वाणी, प्यार एवं स्नेह में था, मत-मतान्तर को कितनी सहजता, सरलता एवं विनम्रता से प्रस्तुत करते थे कि कहीं विरोध के स्वर नहीं रहते थे। उनका बड़ा विनोदी व्यक्तित्व भी था। बड़े से बड़े गम्भीर प्रश्न को मजाक-ठिठोली में चुटकी में सुलझा देते थे। **उनमें अन्य व्यक्ति को सम्मान देने की अद्‌भुत क्षमता थी और अन्य व्यक्ति का हृदय जीतने की कला। किसी भी बात की जड़ को कुछ क्षणों में समझ लेते थे, और अपनी वाक्-क्षमता, बुद्धि और बुद्धिमत्ता से निष्कर्ष की ओर ले जाते थे।**

यह उनकी उदारता का ही परिचायक था, जब भी कोई उनके पास सहायता के लिये गया कभी खाली हाथ नहीं लौटा। गत कुछ वर्षों से उनमें समाज को यथासंभव लौटाने की बहुत इच्छा रही थी। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, "इन दिनों मेरा साथ कुछ ज्यादा ही खुल गया है।" **एक बहुत बड़ा गुण था उनमें कि वे अपनी दृष्टि से जो उचित समझते थे वही सलाह देने के साथ-साथ जिस व्यक्ति को सलाह दे रहे हैं उसके दृष्टिकोण एवं क्षमता का भी ध्यान रखते थे। और कभी भी उनकी सलाह को मानने पर जोर नहीं देते थे। और अगर आप उनकी सलाह से असहमत होते, तब भी उनकी सहयोग में कोई कमी नहीं आती थी।** वे बहुत शान्त चित्त के व्यक्ति थे, उनमें अन्य पक्ष की बात बड़े धैर्य से सुनने की क्षमता थी। इसीलिये सम्भवतः वे एक बहुत अच्छे पंच थे और बिना किसी दबाव के अपनी बात को मनवा लेते थे।

मारवाड़ी सम्मेलन से विश्वम्भर दयाल जी को जोड़ने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पहले दिन से ही मुझे उनका भरपूर समर्थन एवं स्नेह प्राप्त हुआ। सम्मेलन को उनका दिशा-निर्देश, सहयोग हर स्तर पर प्राप्त हुआ। उनका दुःखद निधन सम्मेलन और समाज के लिये एक अपूरणीय क्षति है। ★ ★ ★

# २००६ में पारित वैवाहिक आचार संहिता : व्यवहार में परिणत कराये सम्मेलन

वैवाहिक समारोहों में फिजूलखर्ची, धन का भौड़ा प्रदर्शन, बेतरतीब नाच-गान और मद्यपान पिछले कई दशकों से एक ज्वलंत समस्या रहे हैं। सम्मेलन के विभिन्न मंचों पर इस विषय पर चर्चाएँ हुई हैं, चिन्तन शिविर आयोजित किए गए हैं, गोष्ठियाँ हुईं हैं। आज भी गाहे-बेगाहे यह प्रश्न उठता रहता है।

इस संदर्भ में सन् २००६ में आयोजित एक चिन्तन शिविर उल्लेखनीय है। सम्मेलन के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा की परिकल्पना से ४-५ नवम्बर २००६ को साल्टलेक, कोलकाता स्थित जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन में आयोजित इस चिंतन शिविर में सम्मेलन के केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारी, महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं अन्य पदाधिकारी, युवा मंच के पदाधिकारियों सहित स्थानीय विद्वानों एवं समाजचिंतकों ने शिरकत की। दो दिनों तक गहन विचार-मंथन के बाद एक वैवाहिक आचार-संहिता तय की गयी जो निम्नवत है :

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सज्जन गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

इस आचार-संहिता को सम्मेलन ने यथाशक्ति प्रचारित-प्रसारित किया। प्रांतीय शाखाओं ने भी अपने-अपने स्तर से कदम उठाए। एक विचार-मंच के रूप में सम्मेलन ने अपनी भूमिका निभायी, समाधान तलाशा किन्तु इसको व्यवहार में परिणत करने के लिए पूरे समाज के हर परिवार की भागेदारी जरूरी है।

आज की परिस्थितियों का अगर आप आकलन करें, तो पायेंगे कि कुल मिलाकर स्थिति शुभ नहीं है। आज फिर हमें इस विषय पर विचार करने, समाधान का मार्ग तय करने और सबसे जरूरी सभी को उस मार्ग पर कैसे लाया जा सके, यह सोचना है।

उपर्युक्त के आलोक में प्रांतीय इकाइयों, शाखा सम्मेलनों, समाजचिंतकों से उपरोक्त आचार संहिता को रूपायित करने हेतु पुनर्प्रयास का अनुरोध है।

रामअवतार पोद्दार
*राष्ट्रीय अध्यक्ष*

जुगलकिशोर सराफ
*चेयरमैन,*
*समाज सुधार उपसमिति*

सीताराम शर्मा
*पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं*
*चेयरमैन, सलाहकार उपसमिति*

## अध्यक्षीय

# कुरीतियों के अंधकार से निकलें!

**– रामअवतार पोद्दार**

मातृशक्ति, युवाशक्ति, भाइयों,
राम-राम, राधे-राधे!

प्रकाश के पर्व दीपावली की समस्त अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार को हार्दिक बधाई!

जैसा आप जानते हैं, यह त्यौहार तिमिर-नाशक प्रकाश के विजय-पर्व के रूप में मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीराम लंका-विजय के बाद — अर्धम को परास्त कर — अयोध्या लौटे थे और अयोध्यावासियों ने शुभ-शिरोमणि लक्ष्मी-गणेश का पूजन कर एवं दीप जलाकर यह दिन मनाया। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का वेदविहित मंत्र और गायत्री मंत्र में 'तत्सवितुर्वरेण्यं... प्रयोदयात' इसके और व्यापक अर्थ को इंगित करते हैं। कदाचित् आज इस पर गहन मंथन की आवश्यकता है।**

> ***आज सामाजिक/वैवाहिक कार्यक्रमों में धन का भौड़ा प्रदर्शन और फिजूलखर्ची, मद्यपान का बढ़ता प्रचलन और बेतरतीब नाच-गान, कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनकी अंधकूपी जंजीरें तोड़ना हमारे समाज के लिए आवश्यक है।... आवश्यकता है कि आज समाज का हर परिवार, हरेक व्यक्ति, खासकर युवक-युवतियाँ, इस ज्वलंत प्रश्न के प्रति उदासीनता त्यागकर इसके समाधान में अपनी भूमिका निभायें, तभी हम यह कंटक निकाल पायेंगे।***

वर्तमान परिस्थितियों पर निगाह डालें तो हम अपने आप को एवं समाज को विभिन्न कुरीतियों के अंधकार-जाल में जकड़ा हुआ पाते हैं। संस्कारों का ह्रास हमें 'ज्योतिर्गमय' की उल्टी दिशा में ले जाता है। आज सामाजिक/वैवाहिक कार्यक्रमों में धन का भौड़ा प्रदर्शन और फिजूलखर्ची, मद्यपान का बढ़ता प्रचलन और बेतरतीब नाच-गान, कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनकी अंधकूपी जंजीरें तोड़ना हमारे समाज के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ में ४-५ नवम्बर २००६ को सॉल्ट लेक, कोलकाता में आयोजित सम्मेलन के राष्ट्रीय/प्रांतीय पदाधिकारियों के चिन्तन-शिविर में तय वैवाहिक आचार-संहिता का जिक्र प्रासंगिक होगा, जहाँ गहन विचार-मंथन के बाद आचार संहिता तय की गयी थी।

केन्द्रीय/प्रांतीय सम्मेलनों द्वारा इस आचार-संहिता को व्यवहार-रूप में लाने हेतु अपने-अपने स्तर से यथासंभव प्रयास हुआ है किन्तु पूर्ण सफलता आज भी हमसे कोसों दूर है। आवश्यकता है कि आज समाज का हर परिवार, हरेक व्यक्ति, खासकर युवक-युवतियाँ, इस ज्वलंत प्रश्न के प्रति उदासीनता त्यागकर इसके समाधान में अपनी भूमिका निभायें, तभी हम यह कंटक निकाल पायेंगे।

इस माह हमने सम्मेलन के एक परम हितैषी **श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका** को खो दिया। श्री सुरेका ने न सिर्फ अपने अध्वसाय एवं बुद्धिमता से उद्योग में सफलता पाई, अपितु धन के सदुपयोग की एक अनुकरणीय मिसाल खड़ी की। अपने सहिष्णु, हँसमुख एवं असहमति की स्थिति में सामंजस्य बनाने के गुणों के कारण वे सबके प्रिय थे। सक्रिय ऐसे कि बढ़ती उम्र के वावजूद हरेक बैठक में समय से पहले पहुँचते। मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यक्रमों को न सिर्फ उनका मुक्तहस्त आर्थिक सहयोग मिला बल्कि उनका अमूल्य मार्गदर्शन भी हमें सदैव प्राप्त हुआ। **कृतज्ञ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से मैं उन्हें विनयावनत पुष्पांजलि अर्पित करता हूँ।**

दीप पर्व पर प्रार्थना है किः

**दीप के प्रकाश से सब अंधकार हारें,**
**शुभ कदमों से माँ लक्ष्मी पधारें!**

जय समाज, जय राष्ट्र!

# अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
# २४वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

**प्रिय महोदय,**

**आठ दशक पूर्व १९३५ में हमारे पूर्वजों ने समाज को संगठित करने एवं उसके समग्र विकास के उद्देश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। समाज सुधार, समरसता, राजस्थानी भाषा का प्रचार एवं प्रोत्साहन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य रहे हैं। प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में सम्मेलन विभिन्न प्रांतों – आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर, तमिलनाडु, उत्कल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवं पश्चिम बंग में कार्यरत हजारों सदस्यों के माध्यम से सामाजिक जागरूकता का कार्य कर रहा है। इसी वर्ष सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय के क्रियाकलापों के सुचारू संचालन हेतु कोलकाता के ४१, शेक्सपीयर सरणी (डकबैक हाउस) में १,८९९ वर्गफीट आधुनिक कार्यालय-स्थल खरीदा गया है।**

**राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' का एक पठनीय एवं संग्रहणीय विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा। विशेषांक में सदैव आपका सहयोग प्राप्त होता है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि इस बार भी आपका विज्ञापनरूपी सहयोग प्राप्त होगा। रचनाकारों से लेख एवं संस्मरण भेजने का भी सादर अनुरोध है। कृपया निम्न विज्ञापन-प्रपत्र एवं रचनाएँ ३१ दिसम्बर २०१५ के पूर्व भिजवाएँ।**

**आदर सहित...**

| | | |
|---|---|---|
| **रामअवतार पोद्दार**<br>राष्ट्रीय अध्यक्ष | **प्रह्लादराय अग्रवाल**<br>राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | **सीताराम शर्मा**<br>प्रधान सम्पादक, 'समाज विकास' |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **शिव कुमार लोहिया**<br>राष्ट्रीय महामंत्री | **आत्माराम सोंथलिया**<br>चेयरमैन, वित्तीय उपसमिति | **गोपाल अग्रवाल**<br>राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष | **संजय कुमार हरलालका**<br>राष्ट्रीय संगठन मंत्री |

## Advertisement Proforma

**Advertisement Manager**
**Samaj Vikas**
152B (2nd Floor), Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
e-mail : aimf1935@gmail.com

Dear Sir,

Please publish a Cover / Inside Cover / Special / Full / Half Page Advertisement in your Special Issue to be brought out on the occassion of 24th National Adhiveshan.

Our cheque is enclosed / will be sent in due course on receipt of your bill.

Thanking you,

Sincerely Yours

(Signature)

**Tariff**

| | |
|---|---|
| Cover Page (Colour) | Rs. 50,000.00 |
| Inside Covers (Colour) | Rs. 30,000.00 |
| Special (Full Page Colour) | Rs. 20,000.00 |
| Full Page (Black & White) | Rs. 10,000.00 |
| Half Page (Black & White) | Rs. 6,000.00 |

**Mechanical Data**

| | |
|---|---|
| Overall Page Area | 27x19cm |
| Print Area | 23x17cm |
| No. of Column | Two |

All Cheques in favour of "All India Marwari Federation".

**LAST DATE FOR RECEIPT OF ADVERTISEMENT : 31 DECEMBER 2015**

# सुरेका जी का निधन समाज व सम्मेलन के लिए अपूरणीय क्षति : रामअवतार पोद्दार

## *सीताराम शर्मा ने किया उनकी स्मृति में प्रकल्प की स्थापना का प्रस्ताव*

"अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के परम हितैषी, मार्गदर्शक एवं विशिष्ट संरक्षक श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका का सम्मेलन को योगदान वर्णनातीत है। उनके निधन से हमने एक समर्पित-संतुलित समाजसेवी खो दिया है जिसकी भरपाई सम्भव नहीं है।" ये उद्‌गार सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** ने ३१ अक्तूबर २०१५ को विवेकानंद हॉल, कोलकाता में आयोजित शोक सभा में प्रकट किए।

श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने श्री सुरेका से जुड़े प्रेरक संस्मरण सुनाए और कहा कि वे सबको अपने विचारों से जोड़ लेते थे, किसी विषय पर असहमत होने पर सामंजस्य बनाकर मार्ग निकालने का प्रयास करते थे। श्री सुरेका की कर्मठता एवं कुशलता की चर्चा करते हुए श्री शर्मा ने बताया कि एक अत्यंत छोटी राशि उधार लेकर उन्होंने अपना व्यावसाय प्रारंभ किया और सफलता की ऊँचाइयाँ छुईं। उन्होंने सम्मेलन से श्री सुरेका की स्मृति को अमर बनाने में योगदान हेतु कोई प्रकल्प स्थापित करने का आह्वान किया।

सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया** ने कहा कि बढ़ती उम्र के बावजूद श्री सुरेका की सक्रियता अनुकरणीय थी। उन्होंने श्री सुरेका को कर्मयोगी एवं सन्यासियों से बढ़कर और सम्मेलन हेतु उनके योगदानों को महत्वपूर्ण बताया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** ने कहा, "प्रकृति का नियम है कि जो इंसान आता है उसे जाना भी पड़ता है। किन्तु कुछ देश और समाज के लिए कुछ ऐसा कर जाते हैं जिसे सदैव याद रखा जाता है। श्री सुरेका इन्हीं विशिष्ट व्यक्तित्वों में से थे। सम्मेलन के उच्च शिक्षा कोष के गठन और संचालन में उनकी महती भूमिका थी।"

सम्मेलन की समाज सुधार उपसमिति के चेयरमैन **डॉ. जुगलकिशोर सराफ** ने कहा कि श्री सुरेका ने अपने नाम में निहित 'दयाल' शब्द को अपने कार्यों से चरितार्थ किया है। वे समाज हेतु देने में सदैव आगे रहते थे।

### शोक प्रस्ताव

*अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के परम हितैषी, मार्गदर्शक, विशिष्ट संरक्षक एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउंडेशन के अन्यतम न्यासी श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका के परलोकगमन से पूरा सम्मेलन परिवार मर्माहत है। गत ९ अक्तूबर २०१५ को ही फाउंडेशन की बैठक में उपस्थित होकर उन्होंने विस्तार से सम्मेलन की विभिन्न गतिविधियों पर सदैव की भांति अपना मार्गदर्शन दिया था।*

*सम्मेलन के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने एवं विस्तार देने में वे न केवल स्वयं तन-मन-धन के साथ तत्पर रहते, बल्कि साथियों को भी प्रेरित करते। हाल ही में शेक्सपीयर सरणी स्थित सम्मेलन का नया कार्यालय खरीदने में उनका उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सम्मेलन द्वारा गठित उच्च शिक्षा कोष के लिये भी उनके अवदानों को भुलाया नहीं जा सकता।*

*सुरेका जी दूरदर्शी, हँसमुख, मृदुभाषी एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। परम्पराओं का आधुनिकता के साथ सामंजस्य करने की उनमें विलक्षण प्रतिभा थी। उनके व्यावहार में गांभीर्य एवं विचारों में पाण्डित्य झलकता था। विश्वम्भर दयाल जी सुरेका का आकस्मिक निधन समस्त समाज के लिये एक अपूरणीय क्षति है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन उनके परलोकगमन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिर शांति एवं उनके शोकसंतप्त वृहतर परिवार को इस महती क्षति को सहने की शक्ति प्रदान करें।*

*विश्वम्भर दयाल जी सुरेका का अवदान एवं उनके आदर्श सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।*

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री बिजय डोकानियाँ** ने कहा, "श्री सुरेका के लिए कुछ कहना मेरे लिए सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा। वे समाज के स्तम्भ और हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत थे। हम ज्यादा से ज्यादा युवाओं को समाजसेवा में ला सकें, यही हमारी सुरेका जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

*शोक सभा में मौन श्रद्धांजली*

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री रतन शाह** ने कहा कि समाजसेवा के साथ-साथ श्री सुरेका को संस्कृति एवं साहित्य से बहुत लगाव था। कई संस्थाएँ उनके मानस की उपज हैं। श्री सुरेका को अद्वितीय बताते, उन्होंने कहा –

**तेरी सूरत सी नजर आती नहीं कोई सूरत,**
**हम जहां में तेरी तस्वीर लिए फिरते हैं।**

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री भानीराम सुरेका** ने कहा कि श्री विश्वम्भर दयाल जी हमारे अग्रज की तरह थे और उनका चरित्र अनुकरणीय है।

सम्मेलन के निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संतोष सराफ** ने कहा कि श्री सुरेका न सिर्फ तन-मन-धन से सहयोग करते थे अपितु दूसरों को भी उसके लिए प्रेरित करते थे। समाजसेवा में आजीवन सक्रिय श्री सुरेका की कमी सदैव खलेगी।

**श्री देव कुमार सराफ** ने कहा कि श्री सुरेका का व्यक्तित्व निश्छल और सुलझा हुआ था। असहमति की स्थिति में वे अपनी बात किसी पर थोपने का प्रयास नहीं करते थे।

**श्री हरिकिशन चौधरी** ने श्री सुरेका को एक संपूर्ण व्यक्तित्व बताया और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदानों की चर्चा की।

सम्मेलन के वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन **श्री आत्माराम सोंथालिया** ने कहा कि श्री सुरेका का निधन अपूरणीय क्षति है। युवा पीढ़ी में समाजसेवा की भावना जाग्रत हो, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री गोपाल अग्रवाल** ने कहा कि श्री सुरेका में उलझे समस्याओं को सुलझाने का गुण था। उनके गुणों का अनुकरण ही श्री सुरेका को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री संजय हरलालका** ने श्री सुरेका को सामाजिक सोच का प्रणेता बताया। उन्होंने कहा कि श्री सुरेका धनार्जन के साथ-साथ उसका सदुपयोग करना भी जानते थे, वे 'टाइम, मनी और मैनेजमेंट' तीनों के धनी थे।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

शोक सभा में सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्रीद्वय **श्री कैलाशपति तोदी** एवं **श्री अमित सरावगी, सर्वश्री गोविन्द केजरीवाल, जगदीश पाटोदिया 'चाँद', ओम प्रकाश अग्रवाल, पवन जालान, प्रमोद गोयनका** सहित अनेक गणमान्य समाजबंधु उपस्थित थे, संचालन राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने किया। ★★★

# प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से मारवाड़ी सम्मेलन के पुरस्कारों हेतु मनोनयन का अनुरोध

## रामनिवास आशारानी लाखोटिया राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं दिल्ली की समाजसेवी संस्था 'रामनिवास आशारानी लाखोटिया ट्रस्ट' के संयुक्त तत्वाधान में राजस्थानी मूल के एक व्यक्ति को समाज के प्रति विशिष्ट योगदान हेतु सम्मानित करने के लिए इस सम्मान की स्थापना की गयी है। यह सम्मान सम्मेलन के २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाएगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं १,००,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

## सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. सीताराम रूँगटा की स्मृति में राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिए इस सम्मान की स्थापना की गई है। यह सम्मान सम्मेलन के २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं २१,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

## केदारनाथ भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी स्व. केदारनाथ कानोड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. भागीरथी देवी की स्मृति में राजस्थानी भाषा प्राल-साहित्य की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु इस सम्मान की स्थापना की गयी है। यह सम्मान सम्मेलन के २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं २१,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

## भंवरमल सिंघी समाज सेवा सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजसेवी स्वर्गीय भंवरमल सिंघी की स्मृति में गठित भंवरमल सिंघी समाज सेवा न्यास द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा सम्मान सम्मेलन के २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाएगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं ११,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

**प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से उक्त सम्मानों हेतु उपयुक्त व्यक्ति/संस्था का नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को ३१ दिसम्बर २०१५ तक भेजने का सादर अनुरोध है।**

## श्रद्धांजलि

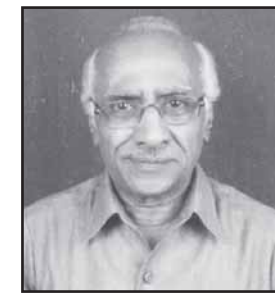

१६.१०.१९३७ - ०२.०८.२०१५

***सुप्रसिद्ध समाजसेवी-व्यावसायी एवं सम्मेलन के विशिष्ट संरक्षक सदस्य श्री हरि किशन जी अग्रवाल (राउरकेला, ओडिशा) का २ अगस्त २०१५ को निधन हो गया।***

***अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि!***

WONDER GROUP

wonder wallz

Made-To-Order Wall Decor

"you imagine we create"

WonderWallz is a division of Wonder Images Pvt. Ltd. The state of art machines & the efficient design team helps to deliver wall solutions for all unique requirements. With over 1lakh designs it is easy to choose a wall which is a true representation of your choice.

The USP is zero wastage, customized design, lower effective cost, environment friendly & unique creation.

MADE -TO- ORDER SOLUTIONS

- Wall Covering
- Textured Wall Paper
- Etching Films
- Printed Transparent Films
- Canvas Art
- Portraits
- Wall Clocks
- Designer Panels & Partition
- Lampshades
- Decor Items
- Signage
- Building Warp

Contact Us:

Aditi: +91 98307 25900
Email: aditi@wondergroup.in
Gallery: www.flickr.com/photos/131388784@N04/
Flickr ID: kediaaditi

Works:
Tangra Industrial Estate-II (Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road, Kolkata-700 015, India.
Tel: +91 33 23298891-92

# बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

● ९ अगस्त २०१५ को नई कार्यकारिणी समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गई, जिसमें ९३ सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में यह महसूस किया गया कि कार्यालय में सदस्यों के सही नाम, पता एवं मोबाईल नं. उपलब्ध नहीं होने के कारण सदस्यों को पत्र/फोन द्वारा सूचना सही समय पर नहीं मिल पाती है। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि संरक्षक एवं आजीवन सदस्यों के फोटोयुक्त एक निर्देशिका अद्यतन पता, मोबाईल नं. एवं ई-मेल के साथ प्रकाशित की जाये।

वर्तमान सत्र में पाँच सौ नये आजीवन सदस्य बनाने का संकल्प लिया गया।

शौचालय निर्माण योजना के क्रियान्वयन हेतु जिन शाखाओं के द्वारा निर्माण कराया जायेगा, उन शाखाओं को पाँच हजार रु. प्रादेशिक अनुदान देने का निर्णय लिया गया।

राजनीति में भागीदारी बढ़ाने हेतु मतदाता सूची नें नाम दर्ज कराने तथा मतदान के दिन मतदान में भाग लेने हेतु प्रेरित करने का निर्णय लिया गया।

बुधवार एवं रविवार को छोड़ कर सभी दिन संध्या ६.०० से ७.०० बजे तक पदाधिकारियों के कार्यालय में उपस्थित रहने की घोषणा की गई।

● १५ अगस्त को प्रादेशिक अध्यक्ष द्वारा झंडोत्तोलन किया गया।

● १६ अगस्त को प्रादेशिक अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला, प्रमंडलीय उपाध्यक्ष श्री मातादीन अग्रवाल, प्रमंडलीय मंत्री श्री शिवनारायण बेरिया एवं संयुक्त महामंत्री श्री नवीन टिबड़ेवाल द्वारा बक्सर, डूमराँव एवं आरा शाखा का दौरा किया गया।

● २२ अगस्त को हायाघाट के विधायक द्वारा समाज पर की गई आपत्तिजनक शब्दों के विरोध में २३ अगस्त को माननीय मुख्यमंत्री एवं अन्य संबंधित लोगों को पत्र देकर विरोध किया गया। २५ अगस्त २०१५ को संवाददाता सम्मेलन आयोजित कर माननीय विधायक द्वारा की गई टिप्पणी के विरोध में कड़ी निन्दा की गई एवं उनसे खेद व्यक्त करने का आग्रह किया गया।

● वैश्य समाज की पटना में काफी सक्रिय महिला श्रीमती सुषमा साहू के राष्ट्रीय महिला आयोग का सदस्य मनोनीत होने पर उनका अभिनन्दन किया गया।

● दिनांक ६ सितम्बर २०१५ को स्थाई समिति की बैठक आयोजित की गई। इस सत्र में स्थायी समिति की यह पहली बैठक थी, कुल २४ सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में प्रादेशिक सम्मेलन के गतिविधियों एवं भावी कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श हुआ। ★ ★ ★

*कार्यकारिणी समिति की बैठक में अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रस्तुत करते हुए प्रादेशिक अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला, (बैठे हुए बायें से दायें) वरीय उपाध्यक्ष श्री युगल किशोर अग्रवाल, निवर्त्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार सुरेका, महामंत्री श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल, वरीय उपाध्यक्ष श्री बिनोद तोदी एवं कोषाध्यक्ष श्री विनोद गोयल।*

# झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

### बुजुर्गों का आदर, परिवार में सामंजस्य आवश्यक : गाड़ोदिया

"इंसान किसी को भी सम्मान देता है तो उसे भी सम्मान मिलता है। बच्चों को संस्कार, बड़े-बुजुर्गों को आदर एवं पूरे परिवार को उनके अनुभवों का लाभ तभी मिलेगा जब हम संयुक्त रूप से रहेंगे और सबके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे। ये विचार झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने रखे। श्री गाड़ोदिया २ अक्तूबर २०१५ को राँची में स्थानीय सामाजिक संस्था अग्रवाल सभा के ३९वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

समारोह में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादूर शास्त्री की जयंती भी मनायी गयी। साथ ही, अग्रसेन जयन्ती का विधिवत उद्घाटन भी किया गया। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ महिलाओं/पुरुषों का शॉल, बुके एवं धार्मिक पुस्तकें देकर अभिनंदन किया गया। 'समाज में बढ़ते पारिवारिक तनाव एवं टूटते रिश्तों के कारण-निराकरण' विषयक महिला एवं युवा गोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

समारोह में झारखंड सम्मेलन के पूर्व अध्यक्षगण **श्री भागचंद पोद्दार** एवं **श्री राजकुमार केड़िया** सहित बड़ी संख्या में गणमान्य महिला-पुरुष उपस्थित थे।

### झारखंड सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष भागचंद पोद्दार सम्मानित

झारखंड आई.पी.एस ऑफिसर्स वाइव्स एशोसिएशन द्वारा आयोजित एक समारोह में झारखंड के **मुख्यमंत्री श्री रघुबर दास** ने झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष **श्री भागचंद पोद्दार** को सामूहिक विवाह एवं समाजसेवा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु शॉल एवं प्रतीक-चिह्न देकर सम्मानित किया।

समारोह में झारखंड के पुलिस महानिदेशक **श्री डी. के. पाण्डेय**, मुख्य सचिव **श्री राजीव गौवा** एवं राँची विश्वविद्यालय के कुलपति **श्री रामचन्द्र पाण्डेय** सहित अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

### झारखंड सम्मेलन के महामंत्री बसंत मित्तल ने किया जिलों का दौरा

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री बसंत कुमार मित्तल ने सितम्बर-अक्तूबर २०१५ में संविधान संशोधन, सदस्यता सूची का पुनरीक्षण, राष्ट्रीय/प्रांतीय सम्मेलन के कार्यक्रमों/गतिविधियों, संगठन-विस्तार आदि विषयों पर स्थानीय नेतृत्व से विचार-विमर्श हेतु प्रांत के जिलों का दौरा किया। उन्होंने धनबाद प्रमंडल के गिरीडीह, धनबाद, बोकारो एवं संथाल परगना प्रमंडल के सभी जिलों-दुमका, गौंडा, साहेबगंज, पाकुड़, देवघर, जामताड़ा – में जिला/स्थानीय पदाधिकारियों के साथ बैठकें कीं।

**समाचार सार**

## साहित्यकार मनोहरलाल गोयल का निधन

राजस्थानी एवं हिन्दी भाषाओं के वरिष्ठ साहित्यकार श्री मनोहरलाल गोयल का २३ जुलाई २०१५ को निधन हो गया। जमशेदपुर से प्रकाशित द्विमासिक-द्विभाषिक (राजस्थानी हिन्दी) पत्रिका 'कुरजाँ' के दीर्घ काल तक सम्पादन के साथ-साथ अपने विशिष्ट साहित्यिक योगदानों हेतु वे कई पुरस्कारों से अलंकृत किये जा चुके हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की हार्दिक श्रद्धांजलि!

# अंतर्मन से आती है कविता : केशरीनाथ त्रिपाठी

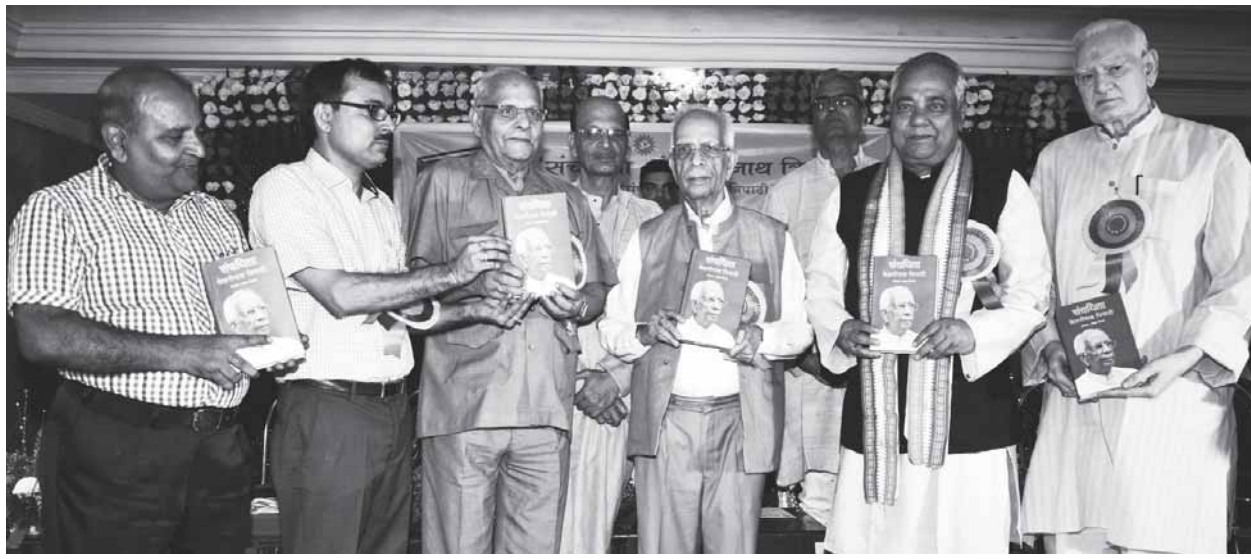

*श्री केशरीनाथ त्रिपाठी के काव्य संग्रहों के संकलन 'संचयिता' के लोकार्पण समारोह में (बाएँ से) सर्वश्री विनोद कुमार शुक्ल, प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रेमशंकर त्रिपाठी, केशरीनाथ त्रिपाठी, महावीर बजाज, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र एवं जुगलकिशोर जैथलिया।*

पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल तथा हिंदी के वरिष्ठ कवि **श्री केशरीनाथ त्रिपाठी** ने कहा है कि कविता अंतर्मन से आती है, प्रयास करने की आवश्यकता नहीं होती। श्री त्रिपाठी ११ अक्तूबर २०१५ को श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा आयोजित 'संचयिता' के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। अनामिका प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस ग्रंथ में श्री त्रिपाठी के अब तक प्रकाशित सभी छह काव्य संग्रहों – मनोनुकृति, आयुपंख, उन्मुक्त, चिरंतन, मौन और शून्य तथा निर्मल दोहे, की सभी रचनाएँ संकलित की गई हैं। संचयिता का संपादन प्रकाश त्रिपाठी ने किया है।

श्री त्रिपाठी ने कहा कि छात्र जीवन में अंत्याक्षरी करते-करते वे कविता के प्रेम में पड़े। बाद में उन्होंने बहुत कोशिश की कि कविता से नाता टूटे और गद्य से नाता जुड़े किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली। उन्होंने खुलासा किया, "छात्र जीवन से ही कविता के प्रति मेरा अनुराग रहा है, कह सकता हूँ कि कविता मेरी प्रेमिका है।" इस अवसर पर राज्यपाल ने अपनी चुनिंदा कविताओं का पाठकर काव्यप्रेमी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

ग्रंथ का लोकार्पण प्रसिद्ध साहित्यकार **डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित** ने किया। इस अवसर पर डा. दीक्षित ने कहा कि केशरीनाथ त्रिपाठी की समूची काव्य यात्रा को उन्होंने बहुत करीब से देखा है। आजकल की कविताओं में आक्रोश एक प्रवृत्ति की तरह दिखता है किंतु केशरीनाथ त्रिपाठी की कविताओं का मुख्य स्वर मानवतावादी है। उनकी हर कविता में कोई न कोई संदेश छिपा है। प्रसिद्ध गीतकार **डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र** ने कहा कि सबसे पहले केशरीनाथ त्रिपाठी की जिस कविता ने उन्हें उनका भक्त बना दिया, वह थी- 'लो आ गया बिहान' जिसमें ग्रामीण बिम्ब हिंदी की समकालीन कविता को एक नई चमक देते हैं।

प्रसिद्ध गायक **श्री ओम प्रकाश मिश्र** ने इस अवसर पर श्री त्रिपाठी की कविताओं की सुमधुर सांगीतिक प्रस्तुति की।

मंच पर पुस्तकालय के मंत्री **श्री महाबीर बजाज** और साहित्य मंत्री **श्रीमती दुर्गा व्यास** भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का काव्यमय संचालन पुस्तकालय के अध्यक्ष **डा. प्रेमशंकर त्रिपाठी** ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन **श्री जुगलकिशोर जैथलिया** ने किया। माल्यार्पण, अंगवस्त्रम तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर अतिथियों का स्वागत किया सर्वश्री एस.पी. तिवारी, गोविंद अग्रवाल, जयप्रकाश सिंह, अरुण प्रकाश मल्लावत, गिरिधर राय, अशोक पांडेय, विनय कुमार दुबे, तारकेश्वर मिश्र एवं वंशीधर शर्मा ने। कार्यक्रम में नेपाल के महावाणिज्यदूत श्री चंद्र कुमार घिमेरे, डा. कृपाशंकर चौबे, डा. करुणा पांडेय, सर्वश्री नंदलाल शाह, अरुण चूड़ीवाल, प्रों मीता बनर्जी, राजश्री शुक्ला, बसुमति डागा, सुरेंद्र बहादुर सिंह, रवि प्रताप सिंह, नंदलाल रोशन, कमल त्रिपाठी, श्रीनिवास शर्मा, प्रवीण त्रिपाठी, ईश्वरीप्रसाद टांटिया, अजय कुमार त्रिवेदी समेत अनेक साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में नारायण दास व्यास, चंद्र कुमार जैन, सत्येंद्र सिंह अटल, सत्यप्रकाश राय, भंवरलाल मूंधड़ा एवं रुगलाल सुराणा सक्रिय थे। ★ ★ ★

viom
NETWORKS

# A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

**First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification**

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

# सुनहरे अतीत से उज्ज्वल भविष्य की ओर हरियाणा

– दयानन्द आर्य

## "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे"

यही वह क्षेत्र था जिसके चप्पे-चप्पे पर श्री कृष्ण (हरि) का यान दौड़ा था इसलिये इसका नाम हरियाणा पड़ा। यहीं से श्री कृष्ण ने विश्व को संदेश दिया थाः

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।**
**अभ्युथानम् धर्मस्य तदात्मांनम् सृजाम्यहम्।।**

(जब-जब धर्म की हानि होती है, धर्म के उत्थान के लिये तब-तब मैं सृजन करता हूँ।)

## अवतारों की लीला भूमि

भगवान विष्णु का छठा अवतार परशुराम के रूप में त्रेता युग में हरियाणा के रेणुकाश्रम में हुआ था जिन्होंने उस युग के सबसे अत्याचारी और अहंकारी माहिष्मती के राजा सहस्त्रार्जुन का वध किया। भगवान विष्णु के आठवें अवतार के रूप में भगवान श्री कृष्ण की सबसे महत्वपूर्ण लीला हरियाणा से हुयी। चौथे अवतार भगवान नृसिंह ने हिरण्यकशिपु को विदीर्ण करने के बाद अपनी लीला का अन्त यहीं किया। भगवान राम के परम भक्त हनुमान को अंजना ने यहीं जन्म दिया। कैथल जिसका पुराना नाम कपिस्थल था, हनुमान का जन्मस्थल माना जाता है यहाँ अंजनी का टीला आज भी विद्यमान है।

**• *स्थापना* : १ नवम्बर १९६६ • *जनसंख्या* : लगभग २.७५ करोड़ • *क्षेत्रफल* : ४४,२१२ वर्ग कि.मी. • *चौहद्दी* : उत्तर में पंजाब/हिमाचल प्रदेश, दक्षिण में राजस्थान/उत्तर प्रदेश, पूर्व में उत्तर प्रदेश और पश्चिम में पंजाब/राजस्थान • *मौसम* : गर्मियो में बहुत गर्मी, सर्दियों में बहुत सर्दी, अक्तूबर से मार्च तक सुहाना • *वर्षा* : सबसे अधिक अम्बाला में लगभग १२३ से.मी., सबसे कम हिसार में ५० से.मी.।**

## स्वाधीनता संग्राम

सन् १८७५ ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्रवाद को अपने मत के प्रचार का अंग बनाया था। आर्य समाज के आन्दोलन का हरियाणा के जन मानस पर बहुत प्रभाव पड़ा।

स्वदेशी आन्दोलन में चौधरी सर छोटूराम का महत्वपूर्ण यागदान था। ४ मई १९१७ को इन्होंने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया। इस जाट नेता को जनता का प्रबल समर्थन मिला।

३० मार्च से अप्रैल १९१९ तक काला कानून के विरोध में महात्मा गांधी के आह्वान पर हरियाणा में अनेक सभायें हुईं। असहयोग आन्दोलन के समय पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें बहुतों ने अंग्रेजी सरकार द्वारा दिए अपने मैडल उतार दिये। इनमें रोहतक के श्यामलाल और अम्बाला के मुरलीधर भी थे। लाला लाजपत राय और शहीद भगत सिंह का हरियाणा से सम्बन्ध पंजाब से कम नहीं था। हरियाणा केशरी के नाम प्रसिद्ध पंडित नेकीराम शर्मा की गणना लोकमान्य तिलक और लाला हरदयाल के बाद कांग्रेस के गरम दल के नेताओं में होती है। हरियाणा में स्वशासन की माँग आपने ही की थी।

## कृषि/उद्योग-धंधे

चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मक्का, जौ, गन्ना, तिलहन, आलू, मूँगफली, सूरजमुखी और सोयाबीन यहाँ की मुख्य फसलें हैं।

दूध और दुग्ध उत्पादों में हरियाणा का भारत में प्रथम स्थान है। सप्त वनों का प्रदेश हरियाणा वृक्षों के मामले में भी किसी से पीछे नहीं है।

ग्रामीण विद्युतीकरण में हरियाणा देश का पहला राज्य है। यहाँ १९७७ तक सभी गाँवों में बिजली पहुँचा दी गयी थी। विद्युत की उपलब्धता के कारण ही यहाँ उद्योग पनपे। उद्योगों में गुडगाँव और फरीदाबाद नगर अग्रणी है। कार, मोटर साइकिल, ट्रैक्टर, सेनिटरी के सामान, गैस-स्टोव और वैज्ञानिक उपकरणों के उत्पादन में हरियाणा देश में प्रथम स्थान रखता है।

## खेल-व्यायाम और मनोरंजन

हरियाणा के लोग खेल और व्यायाम में बहुत रुचि लेते है। पारम्परिक खेल तो यहाँ खेले ही जाते हैं, आधुनिक खेलों में भी यहाँ के लोग बहुत आगे हैं और विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। यहाँ क्रिकेट बहुत लोकप्रिय है। हरियाणा के कपिलदेव की कप्तानी में ही भारत ने सर्वप्रथम क्रिकेट का विश्वकप जीता था। कुश्ती और व्यायाम का यहाँ बहुत प्रचलन है। कुश्ती में भारत केशरी चन्दगीराम और १९५४

में आस्ट्रेलिया के कॉमन वेल्थ खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले राजेन्द्र सिंह इसी संस्कृति की देन हैं।

२००५ के एथेंस ओलंपिक में ३ और २००८ बीजिंग ओलंपिक में ५ में से ४ बाक्सर भिवानी के थे। लोक नाट्य के रूप में सांग यहाँ की परंपरा में विशेष स्थान रखता है जो मनोरंजन के साथ-साथ लोक-जागरण का भी काम करता है।

### वेशभूषा और आभूषण

धोती-कुर्त्ता, पगड़ी और जूता यहाँ की सामान्य पौशाक है। जातियों में पगड़ी और पोशाक की भिन्नता है। जाट स्त्री की पोशाक घघरी-कमीज और छपी हुई ओढ़नी होती है, जिसे ठेल कहते हैं। लहंगा, अंगिया और ओढ़नी अहीर जाति की स्त्रियों की पोशाक है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, अग्रवाल जैसे सवर्णों की स्त्रियों में साड़ी पहनने का रिवाज है। नई सभ्यता से नये-नये फैशन का प्रवेश भी हुआ है। स्त्रियों को आभूषण बहुत प्रिय होते हैं। धनी घरों की स्त्रिया सोने और गरीब घरों की स्त्रियाँ चाँदी के गहने पहनती हैं।

### भाषा और साहित्य

जहाँ तक हरियाणा प्रदेश की भाषा का प्रश्न है, इस बात को सभी जानते हैं कि पंजाबी भाषा-भाषियों से हिन्दी भाषा-भाषियों की अलग पहचान के लिये ही पंजाब का विभाजन करके हिन्दी प्रदेश हरियाणा का गठन हुआ। हिन्दी के साथ-साथ यहाँ की उप भाषा को हरियाणवी कहते हैं। हित के सहित होता साहित्य का धर्म है। हरियाणा की पावन धरती कितनी महिमामयी है, जहाँ एक-एक साहित्यिक कृति में एक-एक लाख मंत्र हैं – वेद में एक लाख और महाभारत में एक लाख। स्मृतियों में मनुस्मृति और पराशर स्मृति, ये दो स्मृतियाँ हरियाणा में ही रची गयीं। मनुस्मृति

का रचनास्थल पृधूदक था और पराशर ऋषि का आश्रम फरीदाबाद के पास है। सरस्वती को हरियाणा प्रदेश में लाने वाले मार्कण्डेय ऋषि थे। उनके द्वारा मार्कण्डेय पुराण की रचना हरियाणा में होना निर्विवाद है। यहीं से श्रीमद्भगवतगीता आरम्भ होती है जो गीता के नाम से प्रसिद्ध है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने चारों वेदों के हिन्दी भाषा भाष्य यहीं लिखे। ★ ★ ★

## हरियाणा प्रदेश वन्दना

– दामोदर शर्मा

सात सुराँ बिन सुणल्यो रै लोगो, बात बणै नहीं गाणै की।
सुरगाँ से भी प्यारी लागै, धरती या हरियाणै की।।

इस धरती पर श्रीकृष्ण नै, अपनी लीला दिखलाई,
धरम राज ने अठे जगत पति, राजनीति सब सिखलाई।
अठे पांडवां करी प्रतिज्ञा धरम ध्वजा फहराणैं की।।

दान - पुन्न करणै में आगै पीड़ पराई जाणैं सै,
ओम शबद में निराकार का साँचा रूप पिछाणैं सै।
रिषि दयानन्दजी कहगा, सबनै कर्त्तव्य निभाणै की।।

भाई - चारा सबसे राखै भेदभाव सै दूर रहवै,
शान्ती चाणीया मिनख अठे का लेकिन कदै न जुलुम सवै।
मातृभूमि हित सोगन खावै, अपना शीश कटाणै की।।

खेतां मैं सोना निपजावै, मेहनत सुबह और शाम करै,
हरियाणै का मरद गाबरू, मिल-जुल कर सब काम करै।
'हरियाणा संघ' करै है सेवा, यह बात नहीं समझाणैं की।।

## हरियाणा दिवस (१ नवम्बर) पर विशेष परिशिष्ट

# हरियाणा के ऐतिहासिक स्थल और नगर

**– बाबूलाल धनानिया**

हरियाणा सरस्वती सभ्यता का आदिम प्रदेश है। ऋषियों की तपस्थली और वीरों की रणस्थली के अलावा यहाँ सनातन, जैन, बौद्ध, सिक्ख और आर्य समाज जैसी स्वदेशी और आक्रान्ताओं की विदेशी सभ्यताएँ पनपीं, जिनके अनेक तीर्थस्थल और स्मारक बने। यहाँ अकेले कुरुक्षेत्र में ३६५ तीर्थों का उल्लेख मिलता है। आजादी के बाद हरियाणा सरकार के पर्यटन विभाग ने इनमें से कुछ को विकसित भी किया है। यहाँ के कुछ प्रमुख स्थलों और नगरों में हैं :

**चण्डीगढ़** : यह नया बसाया हुआ अपने ढंग का अनूठा नगर है। सन् १९५० से १९६३ तक इसका निर्माण हुआ। फ्रांसीसी वास्तुकलाविद् लॉ कस्बूसियर के साथ अन्य कई विदेशी और भारतीय स्थापत्यविदों ने मिलकर इसे बसाया था। ३८३ मीटर की ऊँचाई पर, ११४ वर्ग किलोमीटर में यह ४७ सेक्टरों में बसा है किन्तु अशुभ मानकर इसमें १३ नम्बर का सेक्टर नहीं है। इसके उत्तर पूर्व में श्वेत रंग की पहाड़ी पर चंडी देवी का मंदिर है जिनके नाम पर नगर का नामकरण हुआ है।

**कुरुक्षेत्र** : महाराज कुरु द्वारा स्थापित ८४ कोस के धर्मक्षेत्र को कुरुक्षेत्र कहते है। यह सिन्धु एवं वैदिक सभ्यता का आदिस्रोत रहा है। यहीं १८ दिन तक महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। इसी में स्थित कुरुक्षेत्र नगर भी है। यहाँ ब्रह्मसर और सन्निहत में अनेक तीर्थयात्री आते है और सूर्यग्रहण पर यहाँ पवित्र स्नान होता है। यहाँ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, छटी पातशाही का गुरुद्वारा और बिड़ला मन्दिर है।

**पिंजौर** : चण्डीगढ़ से २० किलोमीटर उत्तर में स्थित यह कभी पाण्डवों के वनवास स्थल था। इसका प्राचीण नाम पंचपुरा था - जो बदलकर पाँचपुरा फिर पिंजौर हुआ। मुगल बादशाह जहाँगीर के जारज पुत्र फिदाई खाँ ने यहाँ १७वीं शताब्दी में एक उद्यान बनवाया जिसमें शीशमहल और जलमहल बड़े खूबसूरत हैं। यह मुगल और राजस्थानी शैली का मिश्रित नमूना है। पटियाला नरेश ने इसे और भी सुन्दर बना दिया। आजकल यह राज्य सरकार के पर्यटन विभाग का एक प्रमुख स्थल है।

**अम्बाला** : इसके नामकरण के सम्बन्ध में दो मत है। एक यह कि यह काशीराज कन्या और धृतराष्ट्र की माता अम्बलिका के नाम पर बसाया गया था। दूसरा मत यह है कि आम के बाग के कारण इसका नाम पहले अम्बावाला पड़ा था। १८८३ ई० में अंग्रेजों ने यहाँ फौजी छावनी बनाई। यहाँ मंजी साहब का गुरुद्वारा, साई त्वक्कुल शाह का रोजा, लक्खी शाह साहिब की मजार और सेंट पाल्स चर्च जैसे स्मारक हैं।

**कैथल** : यह हनुमान जी का उत्पत्ति स्थान होने से कपिस्थल कहा जाता था। यहाँ सरस्वती तट पर विष्णु तीर्थ, मानस तीर्थ, सप्तर्षि कुण्ड और वासुकी तीर्थ है।

**करनाल** : इसका प्राचीन नाम कर्णताल था। दुर्योधन ने कुंतीपुत्र कर्ण को इस क्षेत्र का राजा बनाया था। हरियाणा का नेशनल डेयरी रिसर्च इन्स्टीच्यूट यहीं है। १८०८ ई में अंग्रेजों ने यहीं सेन्ट जेम्स चर्च बनवाया था।

**पानीपत** : पांडवों द्वारा बसाये गये पाँच प्रस्थों में प्राणिप्रस्थ (पानीपत) भी एक था। हरियाणा में कुरुक्षेत्र के बाद यह सबसे बड़ा रणक्षेत्र था। यहाँ तीन ऐतिहासिक युद्ध हुए। उर्दू शायर अल्ताफ हुसैन हाली यहीं पैदा हुए थे। यहाँ बारहवीं शती में खिलजी सुल्तानों का बनवाया हुआ दरगाह कलन्दर साहब का मकबरा है। आज यह हरियाणा का प्रमुख औद्योगिक नगर है।

**हिसार** : इसे १४वीं शती में फिरोजशाह तुगलक ने बसाया था। फारसी में हिसार शब्द का अर्थ है किला। यह सेनाओं की सुरक्षा का स्थान था। इसका प्रथम नाम हिसारे फिरोजा था। शेरसाह सूरी यहीं पैदा हुआ था। यहीं शेरशाह और अकबर के टकसाल थे। आज यहाँ एशिया का सबसे बड़ा पशुधन फार्म है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी भी यहीं हैं।

**हांसी** : इसे आशाराम जाट ने बसाया था। पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गोरी के बीच प्रथम युद्ध यहीं हुआ था। खुदाई में मिले सिक्कों से पता चलता है कि यहाँ यौधेय शासकों का शासन था। जॉर्ज टामस नाम के आयरिश ने कुछ समय के लिए इस पर अधिकार करके इसे अपनी राजधानी बनाया था।

**भिवानी** : यह हरियाणा का बहुत पुराना नगर है। यहाँ सिन्धु सभ्यता के अवशेष पाये गये हैं। राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश को जोड़नेवाला यही प्राचीन व्यवसायिक केन्द्र था और आज भी यह इसी रूप में विख्यात है।

## हरियाणा दिवस (१ नवम्बर) पर विशेष परिशिष्ट

**रोहतक :** इसके नामकरण के सम्बन्ध में कई मत है। पहला, महाभारत के नकुल ने जिस रोहितिका पर चढ़ाई की थी, उसी का वर्तमान नाम रोहतक है। दूसरा, हरिश्चन्द्र पुत्र रोहिताश्व ने इसे बसाया था। और इसका पुराना नाम रोहतासगढ़ था। देश विभाजन के बाद यहाँ बहुत से शरणार्थी आकर बसे। यहाँ मंजी साहब और महर्षि दयानन्द युनिवर्सिटी है।

**सोनीपत :** पांडवों के पाँच प्रस्थों में एक, इसका नाम सुवर्णप्रस्थ था। सन् १८७१ की खुदाई में यहाँ से यौधेयों के सिक्के मिले थे। यहाँ मामू-भांजे का मकबरा है जिसके बारे में यह कहा जाता है कि यहाँ दो व्यापारियों की मृत्यु हुई थी जो मामा-भांजे थे। आज यह हरियाणा का एक प्रमुख औद्यैगिक नगर है। यहाँ अंग्रेजों का बनवाया एक मेथोडिस्ट चर्च भी है।

**बहादुरगढ़ :** इसे राठी जाटों ने शरफाबाद नाम से बसाया था। सन् १७५५ ई. में आलमगीर द्वितीय ने अपने बलूची जागीरदार बहादुर खां के नाम पर एक किला बनवाया था। तभी से इसका नाम बहादुरगढ़ पड़ा। यहाँ का मुरलीमनोहर मन्दिर बहुत भव्य है।

**गुड़गांव :** यह द्रोणाचार्य द्वारा कौरव और पांडव राजकुमारों को शस्त्र विद्या सिखाने का स्थान था। गुरु ग्राम से बिगड़ कर इसका नाम गुड़गांव पड़ा। यह हरियाणा का सबसे बड़ा औद्योगिक नगर है। मारुति उद्योग जैसी कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने यहाँ अपने कार्यालय खोले हैं।

**फरीदाबाद :** सम्राट जहांगीर के कोषाध्यक्ष सैयद मुर्तजाखां फरीद बुखारी ने इसे १७वीं शताब्दी में बसाया था जो बाद में बाबा शेख फरीद के नाम से संत हो गये। यहाँ पर शेख फरीद की मजार, बराहीदेवी का तालाब और पथवारी देवी का मन्दिर प्राचीन स्मारक हैं। देश विभाजन के बाद यहाँ भी शरणार्थी अधिक संख्या में आ बसे।

**नारनौल :** यहाँ बीरबल के छत्ते का अवशेष है। कहते हैं यहाँ बीरबल समय-समय पर प्रजा का दरबार लगाते थे। सतनामी संप्रदाय के प्रवर्तक ऊधोदास और संत कवि नित्यानन्द यहीं के थे। यहाँ मुगलों की टकसाल थी। पतंजलि योग पीठ के संस्थापक योगगुरु बाबा रामदेव यहीं के हैं जिन्होंने अपनी योग साधना से देश-विदेश को लाभान्वित किया है। आपने कोटि-कोटि मानवों को आरोग्यलाभ कराया है।

*(लेखक समाजसेवी संस्था 'हरियाणा नागरिक संघ' के अध्यक्ष हैं।)*

# रोसोगोलमाल – रसगुल्ला के मालिकाना पर युद्ध

## – सीताराम शर्मा

रसगुल्ला या रोसोगुल्ला जैसा बंगाल में कहा जाता है या आप इसे ऐसे ही बोल सकते हैं अगर आप का मुँह रसगुल्ले से भरा हो। फिलहाल लेकिन सब गोलमाल है, भाई गोलमाल, या कहिये रोसोगोलमाल। रसगुल्ला की पैदाईश पर कोलकाता एवं पुरी में बदस्तुर युद्ध जारी है। अभी तक कोलकाता का रसगुल्ला के रूप में परिचित बंगाल की इस लजीज रसभरी मिठाई को उड़ीसा के पुरी ने चुनौती दी है। इतना ही नहीं, उड़ीसा ने इस पर भौगोलिक चिन्ह (जी.आई.) की माँग की है - जिसका तात्पर्य होगा - जिसे सोचकर ही न केवल बंगला-भाषी बल्कि बंगाल निवासी भी सदमें की स्थिति में है कि केवल उड़ीसा में बने छेने की इस रसभरी मिठाई को रसगुल्ला का नाम दिया जा सकेगा। **यह तो खाद्य-युद्ध की स्थिति पैदा कर सकता है - जैसे महाराष्ट्र में शिव सेना के "बड़ा-पाव" पर कब्जा करने के बाद अब रामदास अठ्ठवाले ने इसे "भीम-पाव" का नामकरण देकर हथियाने का प्रयास किया है। खाद्य युद्ध का मामला गंभीर होता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शांति-मध्यस्थता की माँग भी की जा सकती है!**

बंगालियों का सीना गर्व से ५६ ईंच का हो जाता है और मुँह से रोसोगुल्ला का रस टपकने लगता है जब १८६८ में नवीन चन्द्र बसु द्वारा प्रथम रसगुल्ला तैयार करने या के.सी. दास के रसगुल्ले की बात करते हैं।

लेकिन हाल ही में उड़ीसा ने बंगाल के गर्व को यह कहकर चुनौती दी है कि बंगाल १६७ वर्ष का क्या दावा करता है, पुरी के सुप्रसिद्ध जगन्नाथ भगवान के मंदिर में रसगुल्ले का भोग पिछले ३०० वर्षों से लगाया जाता रहा है। बंगाल के लिये यह सीने में खंजर धोंपने के समान है। उड़ीसा सरकार के विज्ञान एवं तकनीक मंत्रालय ने रसगुल्ला के जी.आई. (ज्योग्राफिकल इण्डिकेशन) का दावा ठोंक और उसे सिद्ध करने के लिये एक नहीं तीन अनुसंधान कमिटियों का गठन कर दिया है। बंगालियों का ही नहीं सभी रसगुल्ला प्रेमियों के मुँह का मीठा स्वाद खट्टा हो गया है और वे माँ काली से प्रार्थना कर रहे हैं कि उड़ीसा का दावा टांय-टांय फिस्स हो जाये। ★★★

## काम के प्रति दृष्टिकोण

# अध्यात्म से प्रेरित कार्य प्रगति और आनन्द देते हैं

– डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

## शिवोऽहम – अहम ब्रह्मास्मि!

अध्यात्म किसी धर्म या समुदाय विशेष से संबंधित नहीं है; यह कर्मकांड या सिद्धान्त नहीं है। यह सबके लिए है और नवनिर्माण, उसकी अन्तर्निहित प्रकृति, का शाश्वत सूत्र है। प्रत्येक मनुष्य ईश्वरीय है। अध्यात्म जीवन का सार है। यह आंतरिक शक्ति को जगाता है और जीवन में संतुलन लाता है। आप अपने कार्यस्थल, शिक्षण-संस्थान और घर पर आध्यात्मिक हो सकते हैं। आध्यात्म की भावना का संचार प्रत्येक व्यक्ति में होना चाहिए चाहे वह कुछ भी करता हो। इसके लिए व्यक्तिगत प्रयास और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अध्यात्म का प्रभाव सभी को लाभान्वित कर सकता है। सामूहिक आध्यात्मिक जीवन चमत्कार कर सकता है क्योंकि यह वातावरण को आनन्द के रंग में रँग देता है। न्यायोचित, वृद्धि और विकास, भावी पीढ़ियों और सबके कल्याण के लिए धनार्जन के मौलिक सिद्धांतों के साथ सर्वकल्याण के दैवी नियम की भावना का संचार करना ही अध्यात्म है। खुशी से जीएँ और दूसरों को भी खुशी से जीने दें। यह सिर्फ व्यक्ति के लिए नहीं अपितु पूरे संगठन, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण जटिल व्यावसायिक समस्याओं को हल करने हेतु गहन जानकारी और अंतर्ज्ञान देता है। बाजार में मंदी और निराशा की स्थिति में यह स्थिर खड़े रहने की शक्ति देता है। संगठन का हर व्यक्ति बिना चिंतित या भयभीत हुए, अपना संतुलन बनाए रखते हुए, समाधान देनेवाली सकारात्मक सोच के साथ स्थिति का सामना करने के लिए तैयार होता है। यह सृजन-क्षमता को बढ़ाता है, उर्जा-स्तर को उपर लाता है और आप निर्भय हो जाते हैं। सही दृष्टिकोण जीवन-संघर्ष में सबल बनाता है और आनंद के साथ काम करने की यात्रा हेतु शक्ति प्रदान करता है। यह स्वार्थ, इर्ष्या-डाह, आत्म-अनुशासनहीनता से रहित नैतिक मूल्यों, सृजन-क्षमता, सिद्धांतों, जीवन बिताने के ढ़ंग और काम में सच्चाई की भावना को प्रज्ज्वलित करता है। कोई आलस, विस्मरण या तनाव नहीं। यह आनंद की स्थिति है। स्मरण-शक्ति प्रखर होती हैं। सभी धर्मों के ग्रन्थ कहते हैं : न्यायोचित रास्तों और साधनों से धनी बनो, लेकिन संयम के साथ सादगी से रहो, बर्बादी न करो न करने दो, धनोत्पादन के लिए संपत्ति-सृजन करो, अपने धंधे, विचार और कार्य में ईमानदारी रखो, और निर्भय होकर कठिन परिश्रम करो। यह विविधता में एकता लाता है। एक न्यायोचित व्यक्ति समाज को प्रबुद्ध बनाने में योगदान देगा। काम में सामंजस्य, शान्ति और आनंद होगा। प्रत्येक कर्मचारी में उद्यमिता की भावना के साथ स्वामित्व - – एक जुड़े होने की, भावना होगी। जैसे कम्पास उत्तर दिशा को इंगित करता है, सभी कर्मचारी सकारात्मक रूख रखेंगे। सभी कर्मचारी मुस्कुरायेंगे, एक-दूसरे का उत्साह से अभिनंदन करेंगे। हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इसीलिए संस्थानों-संगठनों को उस तरह काम करने की जरूरत है जिससे 'साथ आने' को बल मिले। स्वामी चिन्मयानंद विश्व को "सहकारी क्रियाकलाप का ब्रह्मांड" कहते हैं। सहकारिता अन्तर्मन से आनी चाहिए, धर्म और न्याय-औचित्य से, और सच्चे सहकारी क्रियाकलाप से, जिसमें न सिर्फ सही कार्य हो अपितु करने का रास्ता भी सही हो। वस्तुतः, स्वयं-शासी संगठन जानते हैं कि सही कार्यों के अपने परिणाम होते हैं, स्वर्ग या मुक्ति के लिए नहीं, बल्कि यहीं, इसी संसार में रोजाने की हरेक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है – ऐसा विज्ञान, भौतिकी एवं रसायन के सूत्र कहते हैं। कर्म के सिद्धांतों में भी यही बात लागू होती है।

**न्यायोचित आचरण करें**

कार्यस्थल को अध्यात्म से जोड़ने पर, लोग श्रमपूर्वक कार्य करते हैं, बिना लाभ एवं प्रोत्साहन के लालच के सच्चाई से अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। उन्हें अर्जुन को कृष्ण के इस संदेश पर अन्तर्निहित विश्वास है कि "तुम्हें अपने कर्त्तव्य निभाने का हक है, किन्तु परिणामों पर न तुम्हारा दावा है, न नियंत्रण। कार्य के फल तुम्हारा उद्देश्य नहीं होने चाहिए।" स्वामी विवेकानंद ने कहा, "अपने अंदर अध्यात्म जगाओ। यदि तुम अध्यात्म को छोड़ दोगे तो इसका परिणाम यह होगा कि तीन पीढ़ियों में तुम विलुप्त हो जाओगे।" चूँकि किसी संस्थान या संगठन का प्रभाव व्यक्ति से अधिक होता है, हमें साथ काम करने के लिए सही नीतियाँ लागू करने की आवश्यकता है। अतः, यदि हमारे संस्थान अध्यात्म की ओर अधिक प्रवृत होते हैं, वे व्यक्ति से बड़े पैमाने पर एक बेहतर विश्व का निर्माण अपने आसपास करेंगे और इस तरह धरती पर स्वर्ग का सृजन करेंगे। इसलिए, हमें साथ मिलकर सही दृष्टिकोण, न्यायोचित व्यवहार एवं काम के प्रति समर्पण के लिए कार्यस्थल पर उपयुक्त वातावरण तैयार करना चाहिए। हमें नवप्रवर्तन, सहभागिता, सही तरीकों से लाभ कमाने के प्रति समर्पित होना चाहिए – लालच से नहीं बल्कि आत्मविश्वास, स्वयं एवं दूसरे में विश्वास, शांति एवं सामंजस्य, निर्भयता एवं भावी पीढ़ियों के लिए धनसृजन की भावना से प्रेरित होकर।

गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, कर्मयोगी सन्यासी की तरह निस्वार्थ कर्म करते मुझे प्राप्त करता हैं। सन्यासी को भी कर्म करना पड़ता है। कर्म करते हुये भी सन्यासी को ईश्वर की प्राप्ति जल्द होती हैं।

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
**मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।** ★ ★ ★

# IISD

*A Gateway to Careers*

SREI Foundation

*"Educate Morally & Technically"*
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

2 Yrs. **PGDM** ₹ 1,00,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

2 Yrs. # **MBA** + **PGDM** ₹ 1,70,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

3 Yrs. # **BBA** ₹ 75,000

# 2 Yrs. **MBA** + PGPM ₹ 85,000

3 Yrs. # **BCA** ₹ 75,000

# 2 Yrs. **MBA** (Hospital Mgmnt.) ₹ 95,000

## DUAL SPECIALISATION AVAILABLE

### ELIGIBILITY & SELECTION
FOR MBA/PGDM

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE WITH 50% SCORE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- APTITUDE TEST
- APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

## *Assistance for placement*

- Eminent Faculty
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- Hostel
- AC Classrooms
- P G Accommodation

**Complimentary Courses**

- Spoken English
- Foreign Languages
- Bengali & Sanskrit
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development
- Theology

**Other Courses :**

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Retail Management
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit, Bengali and Hindi
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course on Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Vocational & Technical Training
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance
- Certificate course on theology

# Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

## INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : (033) 2290 0338

**जमनालाल बजाज जयन्ती (४ नवम्बर) पर विशेष**

# "जमनालाल जैसा दूसरा पुत्र कहाँ मिलेगा" – महात्मा गांधी

**– शिव कुमार लोहिया**, राष्ट्रीय महामंत्री

सन् १९४२ में सेठ जमनालाल बजाज के स्वर्गवास पर महात्मा गांधी मर्माहत हो गये थे। उनकी धर्मपत्नी जानकी देवी को गांधीजी ने सती होने से रोका एवं सांत्वना देते रहे। किन्तु दो दिन बाद प्रार्थना सभा में उनके धैर्य का बाँध टूट गया एवं वे फफक-फफक कर रो पड़े। उनकी मृत्यु पर एक वक्तव्य में उन्होंने लिखा – "सन् १९२० में एक युवक मेरे पास आया एवं अपनी एक माँग रखने की अनुमति माँगी। मैंने उत्तर दिया कि माँग पूरा करना मेरी क्षमता में होगा तो मैं अवश्य सोचूँगा। उस युवक ने कहा – मुझे देवदास की तरह अपना पुत्र स्वीकार कीजिये। मैंने कहा – मंजूर है। पर यह तो कोई माँग नहीं है। तुम तो दाता हो। इसमे तो मेरा लाभ है। वह युवक कोई और नहीं, जमनालाल बजाज था। लोगों को इस संबंध के महत्व का थोड़ा-बहुत अंदाजा है, पर उस दत्तक पुत्र द्वारा अदा किये गये भूमिका की गंभीरता के विषय में बहुत ही कम लोगों को जानकारी है। मैं यह कह सकता हूँ कि इसके पहले कभी भी किसी भी व्यक्ति को इस प्रकार का पुत्र आशीर्वाद के रूप में नहीं मिला होगा। बहुत से लोग पुत्र एवं पुत्री की तरह मेरे कार्य का सम्पादन करते हैं, परन्तु जमनालालजी ने स्वयं को एवं स्वयं की सम्पत्ति को पूर्ण रूप से मेरे प्रति समर्पित कर दिया। मेरा ऐसा कोई भी कार्य नहीं रहा, जिसमें मुझे सहृदयता से उनका सहयोग प्राप्त न हुआ हो एवं वह सहयोग सर्वोत्तम साबित न हुआ हो। वे त्वरित विवेक के धनी थे। वे एक व्यापारी राजकुमार थे। मेरी सेवा में उन्होंने अपनी सम्पत्ति का निःसर्ग किया। वे मेरे कार्यों, मेरे आराम, मेरे स्वास्थ्य एवं मेरे वित्तीय व्यवस्था की सदैव निगरानी करते थे। अनेक कार्यकर्त्ताओं को वे मेरे पास लाते थे। उनकी तरह का दूसरा पुत्र मुझे अब कहाँ मिलेगा। ..... ऐसे पुत्र की मृत्यु एक पिता के लिये गंभीर सदमा है। चौदह साल पहले मगनलाल के मृत्यु के बाद मैने कभी भी स्वयं को इतना खोया-खोया नहीं पाया।"

सेठ जमनालाल बजाज पूरी तरह से स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति समर्पित थे। सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से वापिस आये गांधीजी से वे बम्बई में मिले एवं उन्हे आदर्श के रूप में स्वीकार किया। गांधीजी के बताये नैतिक मूल्यों को उन्होंने सभी क्षेत्रों – राजनीतिक, सामाजिक, व्यापारिक एवं व्यक्तिगत – में अपनाया। इस प्रकार अपने जीवन द्वारा प्रेरणा की अद्वितीय मिसाल कायम की, जिसका जोड़ मिलना मुश्किल है। बीस वर्षों तक जमनालाल जी ने कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष के रूप में बेदाग कार्य किया। उनके आग्रह पर उनके द्वारा प्रदत्त विस्तृत भूमि एवं कोठी में गांधीजी ने वर्धा में आकर सेवा ग्राम की स्थापना की। उनके रिहाईशी मकान बजाज बाड़ी मे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जुड़े सर्वोच्च कांग्रेसी नेताओं का समागम होता रहता एवं उनके सुख-सुविधा का बजाज परिवार की ओर से विशेष संभाल रखा जाता था। जमनालालजी व्यक्तिगत जीवन में एक सन्यासी का जीवन यापन करते थे। उनकी धर्मपत्नी जानकी देवी को उन्होंने सन् १९१९ में पर्दा-प्रथा से बाहर आने के लिए प्रेरित किया। जानकी देवी ने २४ वर्ष की उम्र से अपने पति की प्रेरणा से व्यक्तिगत आभूषणों एवं विदेशी वस्त्रों को सदा सदा के लिये त्याग दिया। बीच-बीच में जानकी देवी एवं उनके बच्चे सेवाग्राम में रहने चले आते। सन् १९२४ में उनके परिवार द्वारा संचालित वर्धा स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर दलितों के लिए खोल दिया गया। पूरे भारतवर्ष मे इस प्रकार का यह पहला उदाहरण था। साथ ही साथ आस-पास के कुँओं को भी दलितों के लिए खोल दिया एवं स्वयं का भोजन तैयार करने के लिए उन्होंने एक दलित को नियुक्त किया। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते हुए कई बार उन्हें जेल भी जाना पड़ा। स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों को भी समर्पित थे। मुख्यतः अस्पृश्यता, हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार, भारतीय ग्रामीण उद्योग, गो सेवा पर उन्होंने काम किया। श्री राजागोपालाचारी के साथ मिलकर उन्होंने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति का गठन किया। सस्ता साहित्य मंडल के अतंर्गत कम मूल्य पर पुस्तकों का प्रकाशन करवाया। जमनालाल जी का पूरा परिवार उनके आदर्शों पर चला। उनकी पुत्री कमला का विवाह भी सेवाग्राम आश्रम में कम-से-कम खर्चे में सम्पन्न हुआ। उनके दो पुत्रों कमलनयन एवं रामकृष्ण ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया एवं जेल भी गये। जमनालाल को लिखे एक पत्र में पूरे अग्रवाल समुदाय के विषय में गांधीजी ने एक संदेश दिया था, जो इस प्रकार है – "मैं अपने अग्रवाल बंधुओं से कहना चाहता हूँ कि जो समुदाय निश्छल समर्पण करेगा, वही भारत की एवं अपने धार्मिक विश्वास की सेवा कर सकता है। मैं आशा करता हूँ कि स्वतंत्रता के इस महान संग्राम में अग्रवाल समुदाय पूर्ण रूप से योगदान करेगा। मैं जानता हूँ कि मारवाड़ी धनी, पवित्र एवं दानी है। धर्म की रक्षा एवं स्वयं को परिमार्जित करने की आज आवश्यकता है।"

जमनालालजी ने अपने त्याग, समर्पण एवं विश्वासपूर्ण सहयोग के द्वारा मारवाड़ी समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में पूरे समाज को गौरवान्वित किया। समाज के ऐसे महान एवं आदर्श सपूत को उनके जन्मदिन पर शत् शत् नमन। ★ ★ ★

Comprehensive and Exclusive

# Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

# Subscribe

100% Bargain

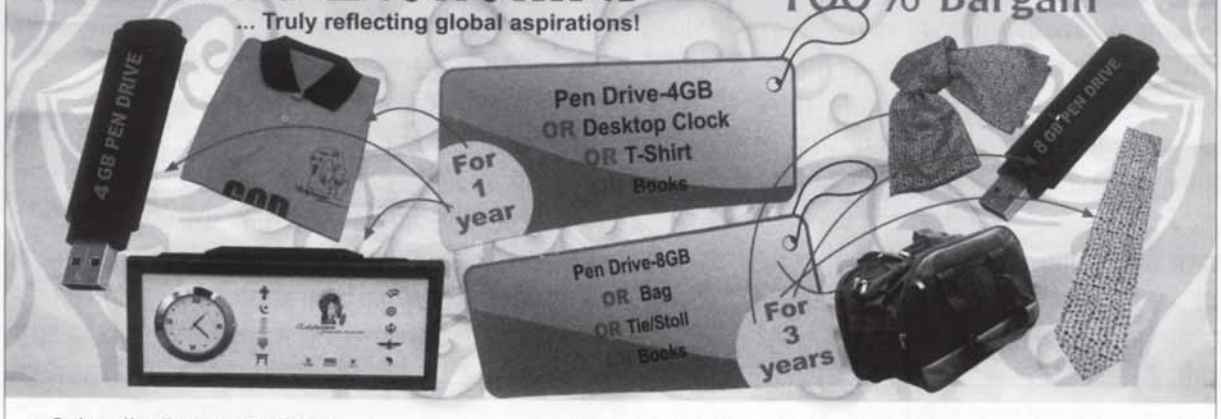


**Subscribe Business Economics :**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

| Tick | Term | No. of Issues | Price you pay | Gift Value | Saving | US $ | UK £ | Gift Option |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ☐ | 3 Years | 72 | 1440/- | 1440/- | 1440/- | 216 | 144 | ☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books |
| ☐ | 1 Year | 24 | 480/- | 480/- | 480/- | 72 | 48 | ☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books |
| ☐ | 1 Year | 24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150) | 240/- | 150/- | 390/- | - | - | ☐ Exclusively for Students/Institutions |
| ☐ | 1 Year | 24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150) | 240/- | 150/- | 390/- | - | - | ☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS |

**For 1 year Book of choice upto ₹ 480** | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

## Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District: _____

State: _____ Country: _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

**Mail this subscription form along with your Cheque / DD to :** Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

**For Subscription enquiries contact : Kolkata :** Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
**New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

**Lucky DRAW**

**QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :**
**1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-**

# सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

## विशिष्ट संरक्षक सदस्य

**श्री गौतम झुनझुनवाला**
मे. हिन्द टेक्सटाइलस मार्केटिंग
२, राजा वूडमंट स्ट्रीट
कोलकाता - ७००००१
मो. : ९३३१०५०८८२

**श्री प्रेम कुमार अग्रवाल**
मे. अग्रवाल लॉजिस्टिक्स प्रा. लि.
१९१, सी. आर. एवेन्यू
तृतीय तल, रूम नं. – ८ एवं ९
कोलकाता - ७००००७
मो. : ९४३३०१२८९०

## आजीवन सदस्य

**श्री सुनिल अग्रवाल**
मे. राजश्री प्लाईवूड
५०६/१, जी. टी. रोड
हावड़ा - ७१११०१
मो. : ९८८३२८३५६९

**सुश्री मीनू पोद्दार**
१७, हंसपुकुर प्रथम लेन,
कोलकाता - ७००००७
मो. : ९८३६८९१६१०/
९८३११६३२३०

**श्री पवन मलानी**
मे. महेश कुमार राजकुमार
१५२बी, एम. जी. रोड (द्वितीय तल)
कोलकाता - ७००००७
मो. : ९९०३२८५०३८/
९३३०६४४३६२

**श्री जय किशन झँवर**
१/१, गाँगुली लेन
चौथा तल
कोलकाता - ७००००७
मो. : ८४४३८३५३२८

**श्री प्रवीण सिंघानिया**
पी-९२, सी.आई.टी. रोड
स्कीम – VI (एम), चौथा तल
कोलकाता - ७०००५४
मो. : ९८३१०७२२६४

**श्री भरत कुमार बैद्य**
२, चर्च लेन, रूम नं. - ३०८बी.
कोलकाता - ७००००१
मो. : ९८३११००१५०

**श्री प्रदीप सदानी**
मे. सदानी इस्टेट
फोर्ट नॉक्स बिल्डिंग, रूम नं. - ३०८
तीसरा तल, ६, कैमक स्ट्रीट
कोलकाता - ७०००१७
मो.: ९३३९०९११६२/९९०३१८११६२

**सम्मेलन के सदस्य**

**बनें एवं बनायें।**

# भूखा पेट और भौंडा प्रदर्शन

– संजय कुमार हरलालका
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

मारवाड़ी समाज में व्याप्त कुरीतियों की अनेक बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन विगत कई वर्षों से करता आ रहा है। हमारे समाज के अलावा भी अन्य समाजों व वर्गों में हम चर्चा के केन्द्र में रहते हैं। हमें इस बात पर गुस्सा आता है कि इतने सारे सामाजिक व धर्मार्थ कार्य करने के बावजूद क्यों हमें हेय दृष्टि से देखा जाता है, क्यों सरकारी व प्रशासनिक स्तर पर भी हमें वो मान्यता नहीं मिलती, जो अन्यों को मिलती है। ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो हमारे जेहन में गूँजते रहते हैं। **अगर सचमुच हमें इन प्रश्नों का उत्तर खोजना है तो हमें और कहीं नहीं, सिर्फ आत्मचिन्तन करना होगा। खोजनी होंगी स्वयं की गलतियाँ। लाना होगा उनमें सुधार। इसी से हमारी सारी बातों का शमन हो सकता है।**

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि मारवाड़ी को व्यापार में तीक्ष्ण बुद्धि वाला माना जाता है। अपनी इसी बुद्धि व अथक परिश्रम के बलबूते वह अपना मुकाम हासिल करता है। ऐसा भी नहीं है कि इतर समाज व वर्ग के लोग बुद्धिमान या परिश्रमी नहीं होते। आज तो हमारे समाज से कहीं ज्यादा अन्य समाजों के लोग व्यापार में हमसे आगे निकल चुके हैं। बावजूद इसके उनको उस हेय दृष्टि से नहीं देखा जा रहा है, जिसका शिकार हमारा समाज है।

दरअसल, हमारा समाज वर्षों से दिखावा, आडम्बर व स्वप्रचार के ऐसे मकड़जाल में फँसा है कि उससे बाहर निकलने के बारे में सोच ही नहीं रहा, जबकि अन्य समाज के लोग इसे आज भी बुराई के रूप में देख रहे हैं। इस सम्बन्ध में एक गंभीर और सोचनीय बात की चर्चा यहाँ कर रहा हूँ। अगर इसमें सच्चाई लगे तो यह मान लेना चाहिए हमें बुराईयों को खत्म करने के लिये आत्मचिन्तन की कितनी जरूरत है।

घर हो या व्यापार-स्थल, हम वहाँ अपने धन को छुपा कर रखते हैं। छुपाकर रखने से तात्पर्य है बंद आलमारी या दराज में रखते हैं। क्यों? सीधा सा जवाब होगा कि यह खुले में रखने की चीज नहीं है। अगर कोई ले गया तो? जबकि इसके पीछे सिर्फ इतना ही कारण नहीं होता है।

आज के भौतिकवादी युग में जरूरतें सभी की बढ़ गई हैं, पर यह जरूरी नहीं कि उसकी आय भी उतनी ही बढ़ी है। कोई भी इंसान जन्म से गलत नहीं होता। कुछ संगत में गलत हो जाते हैं तो कुछ को समय गलत बना देता है। जरूरत और लालच, ये दो ऐसी बातें हैं कि अच्छा-खासा इंसान भी इसकी जद में आकर गलत कार्य कर बैठता है। अब अगर किसी जरूरतमंद आदमी के सामने हम खुले में धन रख देंगे तो उसका ईमान डगमगाने की संभावना ज्यादा रहती है। अगर वह गलत नहीं है तो भी जरूरत कहें या लालच, उसे गलत बना देती है। इसीलिये हम धन को खुले में नहीं रखते। कई बार तो ऐसा भी देखने, सुनने व पढ़ने को मिला है कि धन के लिये नौकर/कर्मचारी ने मालिक का कत्ल कर दिया। ऐसा इसलिये होता है कि लालच मानव-प्रकृति है। लालच के साथ जरूरत भी जुड़ जाये तो अच्छा-खासा, वर्षों पुराना साथी भी बेईमान हो जाता है। अब अगर हम धन का खुले में प्रदर्शन कर रहे हैं तो हम सिर्फ अपना ही बुरा नहीं कर रहे, बल्कि किसी व्यक्ति का ईमान खराब कर बुराई को जन्म भी दे रहे हैं।

हमारे घरों में शादी-विवाह का मौका हो या अन्य कोई अवसर, दिखावा व प्रदर्शन करना तो हमारी शान में शामिल हो गया है। **एक समय था जब ऐसे अवसरों पर सारी तैयारियाँ घर के ही लोग, परिजन या मित्र करते थे। किन्तु आज जमाना बदल गया है। आजकल सारी व्यवस्थाएँ इवेन्ट मैनेजमेन्ट के हाथ में होती हैं, कैटरर होते हैं।** हम तो लाखों का पैकेज देकर उनसे कांट्रेक्ट कर लेते हैं और संतुष्ट हो जाते हैं कि हमारी सारी व्यवस्था धन के बलबूते अच्छी हो रही है। लेकिन हम जिन्हें पैकेज पर ये ठेका देते हैं, वे क्या सारा काम खुद करते हैं? नहीं, कर भी नहीं सकते। इसके लिये वे सैंकड़ों की तादात में बेरोजगार व जरूरतमंद लोगों को काम में लगाते हैं। वे किस जाति या धर्म के हैं, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं होता। उन्हें इस कार्य के एवज में क्या मिलता है, यह हमें मालूम नहीं होता। और अगर हो भी जाये तो हमें उससे मतलब नहीं रहता क्योंकि हमने तो उनके मालिक को पैकेज दिया है।

अब सोचिये। उक्त बेरोजगार और जरूरतमंद व्यक्ति के सामने हमारे पारिवारिक समारोह के दौरान किये जा रहे अनाप-शनाप व्यय की जो तस्वीर आती है, जिस तरह की भोजन व पैसे की बर्बादी वह देखता है, क्या वह उसको सहन कर पाता है? जिस व्यक्ति का परिवार दो जून की रोटी को तरस रहा हो या भौतिकवादी युग में किसी सुविधा का भोग न कर पा रहा हो, उसके दिल में हमारी कैसी तस्वीर उभरती है। संभवतः रात में सोते समय भी उस भूखे पेट की आँखों के सामने हमारा भौंडा प्रदर्शन ही घूमता होगा। भले ही हमें वह कुछ नहीं कह पाता हो किन्तु हम बाहर तो चर्चा के केन्द्रबिन्दु में आ ही जाते हैं। वे अपने लोगों के बीच जाकर हमारे इस भौंडे प्रदर्शन की चर्चा करते हैं, कोसते हैं हमें। **जिस तरह खेलने की उम्र में खिलौने की दूकान में काम करने वाला बच्चा एक खिलौने को पाने के लिये घुटता रहता है, उसी तरह की कुढ़न होती होगी उस व्यक्ति को भी।** और हम हैं कि इस बात को समझने के लिये तैयार ही नहीं हैं।

आज तो हम यह सोचते हैं कि जिसने जितना दिखावा व प्रदर्शन कर लिया, हम उससे अलग और क्या कर सकते हैं। अगर अभी भी हम चाहते हैं कि हमारे समाज की वो पहचान बनी रहे, जो हमारे बुजुर्गों ने बनाई थी तो हमें कुछ ऐसा अलग करने की सोचना होगा, जो समाज के लिये प्रेरणास्पद बने न कि दिखावे या अपनी झूठी शान के लिये हो।

**कुछ अलग करना है तो भीड़ से हटकर चलें,**
**भीड़ साहस तो देती है, लेकिन पहचान छीन लेती है।** ★★★

# Shaping

## a greener tomorrow

Accountability to the future generation

S R RUNGTA R GROUP

**S. R. RUNGTA GROUP**

*Cares for the land and its people*

MINING, STEEL & POWER

Rungta House, Chaibasa, Jharkhand - 833201

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2013-2015
Date of Publication - 6th November 2015
RNI Regd. No. 2868/68




*From :*
**All India Marwari Federation**
152B, Mahatma Gandhi Road
(2nd Floor) Kolkata - 700 007
Telefax : (033) 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com